उपसंहार

उपसंहार

मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंए का अध्ययन करने के पश्चात जो तथ्य निष्कर्ष के रूप में मेरे सामने आए हैं वे निम्न प्रकार हैं -

मोहन राकेश : व्यक्ति एवं कृति परिचय -

मोहन राकेश का व्यक्ति एवं कृतियों के संबंध में अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश जी का जन्म 8 जनवरी, 1925 को अमृतसर में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था । उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी के साथ समझौता नहीं किया । उनका व्यक्तित्व अनेक सम विषम घटनाओं से भरा हुआ था । राकेश में जबरदस्त आत्माभिमान, जिंदादिल और जीवन के प्रति अटूट आस्था रहीं हैं । उनके जीवन को समझना बहुत ही मुश्किल था । राकेश के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । इसी कारण उन्हें कम उम्र में ही कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा ।

राकेश ने अपने जीवन में कभी भी स्थिर नौकरी नहीं की । इसी कारण उन्हें जीवन में अनेक नौकरियाँ करनी पड़ी । उनका इस्तीफा हमेशा उनकी जेब में पड़ा रहता था । राकेश को एक अच्छे घर की तलाश थी वह अनीता से शादी करने के बाद मिल गया । उनके जीवन में उनके मित्रों का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण हैं । उन्हें प्रथम और द्वितीय विवाह में कभी वैवाहिक सुख शांति नहीं मिली । उन्हें वैवाहिक जीवन में अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा । उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं ईमानदार, स्पष्टवादी, स्वाभिमानी अच्छे मित्र और अहंवादी आदि ।

राकेश ने हिंदी भाषा, भारतीय लेखक और भारतीय साहित्य का हमेशा सम्मान किया । उन्होंने हिंदी लेखकों को एक नयी दिशा प्रदान की । राकेश को साहित्यिक बनाने में उनके माता-पिता का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण है । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया । उनकी साहित्य यात्रा अमृतसर से शुरू हुई और दिल्ली में उनका अकाली निधन हुआ । निष्कर्षत: स्पष्ट है कि राकेश बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यिक सिद्ध होते हैं ।

मोहन राकेश के उपन्यास : संक्षिप्त परिचय -

मोहन राकेश जी के उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश की मृत्यु तक उनके कुल तीन उपन्यास प्रकाशित हुए थे । मृत्यु के पश्चात 'काँपता हुआ दरिया' प्रकाशित हुआ और 'स्याह और सफेद' के कुछ अंश भी उपलब्ध हुए । उनके 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में उन्होंने एक ओर दिल्ली जैसे महानगर के परिवेश में व्याप्त समता-विषमता को रेखांकित किया है तो दूसरी ओर नीलिमा और हरबंस के अंतर्द्वन्द्व की कहानी बतायी है । साथ ही लेखक ने इस उपन्यास में विवाहित जीवन की अर्थहीनता का सजीव चित्र खींचने का प्रयास किया है । इस उपन्यास में इबादत अली की बेटी का घर से निकल जाना और ठकुराईन को अपने बेटी की शादी की चिंता सताना यह आर्थिक स्थिति का ही परिचायक है । 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में अनेक समस्याएँ सामने आती हैं । परंतु इन समस्याओं का समाधान नहीं दिखाई देता । लेकिन हर पात्र अपने अधिकार के लिए क्रांति और विरोध करने का संकेत देता है । कहा जा सकता है कि मोहन राकेश जी ने इस उपन्यास में दिल्ली महानगर का चित्रण और स्त्री-पुरूष के संबंधों की कटु अनुभुतियों को प्रस्तुत किया है ।

राकेश जी का दूसरा उपन्यास है 'न आने वाला कल' । इस उपन्यास में राकेश जी ने उन तमाम लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी का चित्र खींचा है जो फादर बर्तन स्कूल जैसे दमघोंटू वातावरण में जी रहे हैं । यह उपन्यास अस्तित्ववादी चेतना का एक ऐसा उपन्यास है जो स्कूली जिंदगी पर आधारित होकर भी मध्यवर्गीय चेतना को ईमानदारी से प्रस्तुत करता है । इस उपन्यास में मानवीयता का रूप कहीं भी किसी भी रूप में नजर नहीं आता । उपन्यास के सभी पात्र अपनी जिंदगी में किसी न किसी कारण दु:खद जीवन जी रहे हैं । साथ ही इस उपन्यास में मानवीय संबंधों के विघटित स्वरूप गहरे रूप में मिलते हैं । इस उपन्यास में वर्तमान कालीन शिक्षा व्यवस्थापर भी तीखा व्यंग किया है । उपन्यास के सभी दंपत्ति सुखमय जीवन जीने के लिए झगड़ते दिखाई देते हैं । मगर किसी को भी सफलता नहीं मिलती । चाहे वह मनोज हो, चेरी हो या कोहली । हर एक के दांपत्य जीवन में किसी न किसी कारण बिखराव और तनाव दृष्टिगोचर होता हैं । इसी तनाव के कारण सभी एक-दूसरे से दूर भागना चाहते हैं । परंतु समाज के डर के कारण वे एक साथ रहते हैं । साथ-साथ रहते हुए भी वे घूटन महसूस करते हैं । स्पष्ट है कि इस उपन्यास में सुखमय दांपत्य जीवन की अपेक्षा दु:खमय दांपत्य जीवन अधिक दिखाई देता है ।

राकेश जी ने अपने तीसरे उपन्यास 'अन्तराल' में वर्तमान कालीन स्त्री-पुरूष के बीच परिस्थितियों के प्रभाव के कारण किसी तरह अंतराल बना रहता है इसका चित्रण किया हैं । जटिल परिस्थितियों के फल स्वरूप दोनों के बीच का अंतराल मिट नहीं पाता । इस उपन्यास में लेखक ने स्त्री-पुरूष के बीच घटित होने वाले जटिल से जटिल और सरल से सरल अनुभूतियों का यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यास में आधुनिक मानव-जीवन के संबंधों की कहानी अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित की है । साथ ही मनुष्य में पारिवारिक संबंधों के अतिरिक्त मनुष्य के जो निजी संबंध होते हैं उस पर भी प्रकार डाला है । कहा जा सकता है कि 'अन्तराल' उपन्यास में पुराने और नवीन नैतिक मूल्यों का टकराव है । इस उपन्यास में यौन समस्या की ओर भी इशारा किया है । साथ ही श्यामा का संपूर्ण परिवार आर्थिक आधार पर टिका हुआ नजर आता है । इससे स्पष्ट है कि इन्सान में स्थित इन्सानियत गायब होती जा रही है । प्रस्तुत उपन्यास पर अस्तित्ववाद की गहरी छाप दिखाई देती है । इस उपन्यास का मुख्य विषय है स्त्री-पुरूष संबंध को परिभाषित करना । कुछ संबंध ऐसे होते हैं जिन्हें नाम नहीं दिया जाता । ऐसे अनाम संबंधों को ही लेखक ने यथार्थता से प्रस्तुत किया है । साथ ही आज के बदलते मानवीय संबंधों की ओर भी संकेत किया है ।

राकेश जी का चौथा प्रकाशित उपन्यास हैं 'काँपता हुआ दरिया' । इस उपन्यास में राकेश जी ने उन तमाम निम्नवर्गीय परिवार के लोगों के जीवन का चित्रण किया है जो कश्मीर के सौंदर्य में हाँजी का काम कर अपना निर्वाह करते हैं । परंतु जब इस भाग में नैसर्गिक या मानव निर्मित संकट आ जाता है तब वे लोग कैसे भयभीत होकर अपनी जिंदगी गुजारते हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है । साथ ही इन संकटों का सामना करते समय वहाँ की दम्पत्तियों का जीवन तथा उनका व्यवहार किस प्रकार रहता है उसकी ओर भी निर्देश किया है ।

अंत में कहा जा सकता है कि राकेशजी का उपन्यास साहित्य उनके अपने काल के समाज जीवन की और दांपत्य जीवन की जीती जागती तस्वीर है इसमें कोई संदेह नहीं ।

मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध -दांपत्य जीवन के संदर्भ में-

राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के दांपत्य जीवन का अध्ययन करने के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मोहन राकेश जी से सुखमय दांपत्य जीवन के चित्रण की अपेक्षा करना गलत है। उनके सभी उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन किसी न किसी कारण दु:खद दिखाई देता है ।

राकेश जी का पहला उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' में चित्रित हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन आर्थिकता से संपन्न है । परंतु दोनों पति-पत्नी के आचार-विचार तथा दोनों में अहं होने के कारण उनका दांपत्य जीवन खोखला बना है । वे दोनों एक-दूसरे से छुटकारा पाने के लिए तरस रहे हैं । वे अपने आपको अकेले में 'अंधेरे बंद कमरे' में बंदिस्त करना चाहते हैं । दूसरी ओर शुक्ला जैसी स्त्री सुरजीत जैसे गुंडे व्यक्ति के साथ विवाह कर अपना दांपत्य जीवन अच्छी तरह से जी रही है । राकेश जी ने दिल्ली जैसे महानगर के उच्च शिक्षित व्यक्तियों के दांपत्य जीवन का चित्रण भी किया है जिससे स्पष्ट होता है कि दिल्ली जैसे महानगर के व्यक्ति उच्च शिक्षित होते हुए भी अपने अहं के कारण दु:खमय दांपत्य जीवन बिताते हैं ।

राकेश जी का दूसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' के सभी दंपतियों का दांपत्य जीवन एक-दूसरे के समान दिखाई देता है । इस उपन्यास के सभी दंपति एक-दूसरे से छूटकारा पाकर आने वाले कल की प्रतीक्षा करते हैं । वह 'कल' कभी भी आने वाला नहीं है । इस उपन्यास में आर्थिक अभाव के कारण एकाध स्त्री का जीवन किस प्रकार बरबाद हो जाता है इसका चित्रण किया है । सिर्फ माँ-बाप की आर्थिक हालत के कारण ही शारदा जैसी नवयुवती को कोहली जैसे अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ शादी करनी पड़ती है । परंतु वह उसके व्यवहार या बर्ताव पर खुश नहीं है । पति की संदेह युक्त दृष्टि के कारण उसकी पिटाई होती है । वह अपने पति से इतनी तंग आ चुकी है कि वह उससे दूर भागना चाहती है । टोनी व्हिसलर जैसे आर्थिकता से संपन्न व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी पति-पत्नी के आचार विचारों में भिन्नता होने कारण एक-दूसरे से अपनी मुक्तता करना चाहते हैं । इससे ज्ञात होता है कि उक्त पति-पत्नी अपने आपको एक-दूसरे से मुक्त करना चाहते हैं । इस उपन्यास में चित्रित पति-पत्नी बम्बई कि स्कूल में नौकरी करते हैं । राकेश जी ने इस उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन का चित्रण कर यह दिखाने का प्रयास किया है कि बम्बई जैसे शहर में रहने वाले पति-पत्नी आर्थिक समृद्धि के होते हुए भी तथा आर्थिक अभाव के कारण भी अपना दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय ही बीता रहे हैं । इस प्रकार इस उपन्यास के पात्र एक-दूसरे से छूटकारा पाने की चाह रखकर जिंदगी बिताते हुए दिखाई देते हैं ।

राकेश जी का तीसरा उपन्यास 'अन्तराल' में चित्रित दांपत्य जीवन भी सुख की अपेक्षा दु:खमय ही अधिक है । श्यामा जैसी स्त्री अपने पति को पूर्ण रूप से पाना चाहती है । परंतु वह अचानक चल बसता है ।

तब उसे सहारा देने के बदले उसके जीजाजी उससे अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए तरस रहे हैं । श्यामा कुमार के साथ नामहीन संबंध स्थापित करने के लिए तरस रही है और कुमार अपनी पत्नी को पूर्ण रूप में पाने में असफल हो चुका है । इससे ज्ञात होता है कि इस उपन्यास के सभी पात्र एक-दूसरे का सहारा लेना चाहते हैं । क्योंकि वे अपने दांपत्य जीवन में दु:खी हैं । सबके सब नाटकीयता पूर्ण जिंदगी जी रहे हैं । इससे ज्ञात होता है कि इस उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन भी दु:खमय तथा कुंठा से युक्त है ।

राकेश जी का चौथा उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में चित्रित दांपत्य जीवन भी ज्यादातर सुखी नहीं दिखाई देता । हर एक के अपने विचार तथा विचारों में भिन्नता और आधुनिक जीवन जीने की आकांक्षा के कारण इस उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन भी ज्यादातर दु:खी ही दिखाई देता है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में भी राकेश ने सुख की अपेक्षा दु:खमय दांपत्य जीवन का ही ज्यादा चित्रण किया है ।

अंत में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन दु:ख से परिपूर्ण है । प्रो. मलहोत्रा तथा हरबंस जैसे व्यक्ति अपने दांपत्य जीवन में पूर्णत: असफल हैं । प्रि. गोपाल जैसे आदमी आज के शिक्षा जगत की एक विकृत व्यवस्था है जो अपनी छात्राओं को भोगना चाहते हैं । इसके चित्रण में राकेश जी को पर्याप्त सफलता मिली है ।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध - रिश्तों के संदर्भ में -

राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के रिश्तों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश जी ने दांपत्य जीवन के साथ - साथ स्त्री-पुरूष के पारिवारिक रिश्तों की ओर भी संकेत किया है । साथ ही अनेक रिश्तों का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मता से किया है ।

उनके 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में चित्रित पिता-पुत्री, माता-पुत्री तथा जीजा - साली के रिश्तों का अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात होता है कि दोनों सदस्य एक - दूसरे को पाना चाहते हैं । दोनों को भी एक-दूसरे के सहारे की आवश्यकता है । इसलिए इबादत अली तथा खुरशीद की आर्थिक स्थिति का चित्रण कर अल्पसंख्यांक जाति की समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । ठकुराईन तथा निम्मा जिस बस्ती में रहती है वहाँ का चित्रण कर राकेश जी ने दिल्ली जैसे महानगर की एक गंदी बस्ती और वहाँ की गरीब जनता की

ओर संकेत किया है । ऐसे महानगर में हरबंस जैसे व्यक्ति अपनी मर्यादा छोड़ अपनी साली को पाना चाहते हैं । इस प्रकार आज के आधुनिक महानगर में बदलते सामाजिक मूल्यों का सही चित्रण करने में राकेश जी को पर्याप्त सफलता मिली है ।

राकेश जी का दूसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' में इसके बारें में ज्यादा चित्रण नहीं हुआ है। इसमें पिता-पुत्री के रिश्ते का संक्षिप्त चित्रण उपलब्ध है । शोभा विधवा होते हुए भी उसके पिता उसका विवाह करना चाहते हैं । उन्हें सफलता भी मिलती है । यह दिखाकर राकेश जी ने आधुनिक युग में होनेवाले विधवा विवाह का संकेत दिया है तो शारदा की जिंदगी उनके पिता के आर्थिक अभाव के कारण किसप्रकार नरक बन जाती है यह दिखाकर बम्बई जैसे महानगर में होने वाले आधुनिक बदलाव तथा आर्थिक समस्या के कारण होते अनमेल विवाह का आँखों देखा हाल भी चित्रित किया है ।

उनके तृतीय उपन्यास 'अन्तराल' में माता-पुत्र के रिश्ते को दिखाकर यह स्पष्ट किया गया है कि एक माता अपने हठ के लिए अपने पुत्र को उसके प्यार की कुर्बानी देने के लिए बाध्य करती है । इससे ज्ञात होता है कि इनके रिश्तें में स्वार्थ ने जगह ले ली है । साथ ही भाई-बहन तथा जीजा-साली के रिश्तों को स्पष्ट कर समाज में बदलते तथा बिगड़ते चले जा रहे रिश्तों का यथार्थ चित्रण किया है ।

राकेश जी का चौथा उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में पिता-बेटियों के रिश्ते का चित्रण पर्याप्त मात्रा में किया हुआ परिलक्षित होता है । यह पिता-बेटी का रिश्ता बिगड़ा हुआ ज्ञात होता है । इस रिश्ते के हर पात्र में अहं ज्यादा होने के कारण उनका रिश्ता सिर्फ नाममात्र ही प्रतीत होता है ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि सभी सदस्य के रिश्ते सिर्फ रिश्ते ही बन चुके हैं । वे सभी अपनी - अपनी दृष्टि से जीना चाहते हैं । उनके रिश्तों में आत्मीयता के बदले स्वार्थ का भाव ज्यादा दिखाई देता है ।

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध - काम के संदर्भ में'' -

राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि विश्व के हर एक मानव में भूख के समान एक ओर मूल प्रवृत्ति होती है शारीरिक आकर्षण और शारीरिक भूख की । उसे तृप्त करने के लिए हर स्त्री-पुरूष कोई न कोई मार्ग निकालता ही है ।

मानव जीवन में धन, दौलत, गाडी और बंगला आदि के समान एक और आवश्यकता होती है शारीरिक भूख की। इस भूख को मिटाने के लिए ही शादी-ब्याह जैसे सामाजिक बंधनों को स्वीकारना पड़ता है ।

'अंधेरे बंद कमरे' में राकेश ने जो चित्रण किया है वह भी बहुत सूक्ष्मता से किया है । मधुसूदन एक युवा पात्र है । वह अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए ही सुषमा श्रीवास्तव के प्रति आकर्षित हो चुका है। परंतु सुषमा खुलेआम जिंदगी जीने वाली नारी होने के कारण उसने संसार देखा है । वह अब अपनी इस खुलेआम जिंदगी से तंग आ चुकी है । वह अब अपना एक घर बसाना चाहती है । इससे ज्ञात होता है कि सुषमा का मधुसूदन के प्रति जो आकर्षण है वह काम के संदर्भ में नहीं है । दोनों की आकांक्षाओं में भिन्नता होने के कारण उनका काम जीवन सिर्फ एक-दूसरे के साथ बातचीत करने तक ही सीमित रहा है ।

राकेश जी के दूसरे उपन्यास 'अन्तराल' में भी काम-संबंधों का चित्रण है । इस उपन्यास की नायिका श्यामा एक विधवा नारी है । साथ ही यौवन से परिपूर्ण नारी है । उसने अपने पति के साथ सिर्फ डेढ़ साल की वैवाहिक जिंदगी गुजारी है । परंतु इस वैवाहिक जीवन में जितनी काम वासना की तृप्ति हुई है उससे वह संतुष्ट नहीं है । वह अकेलेपन की शिकार होने के कारण अपने आप को अकेलेपन से मुक्त करना चाहती है । कुमार भी विवाहित होते हुए भी अपनी पत्नी द्वारा अपनी कामवासना की तृप्ति न कर सका । इसी कारण वह अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए तड़फ रहा था । वह भी अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ही किसी न किसी स्त्री का सहारा लेना चाहता था । श्यामा और कुमार दोनों भी एक - दूसरे पर आकर्षित होकर अपने अकेलेपन को भरना चाहते हैं । दोनों अपनी अतृप्त काम वासना तृप्त करने के लिए ही 'काम संबंध' स्थापित करते हैं । परंतु उसे नाम नहीं देते इससे ज्ञात होता है कि दोनों अपने अकेलेपन से अपने आपको मुक्त करने के लिए ही एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं ।

राकेश जी का तीसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' में चित्रित काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में जो काम संबंध स्थापित हुआ है, वह अपने खालीपन तथा तनावपूर्ण वैवाहिक जीवन से छुटकारा पाने के लिए ही स्थापित है । उपन्यास के नायक मनोज सक्सेना के अंदर अपनी अतृप्त कामनाओं के पूर्ति की भूख है । वह अपनी पत्नी शोभा से शादी कर अपने खालीपन को भरने की कोशिश करता है । परंतु शोभा से जुडे पुरूष से उसे द्वेष है । इसी कारण वह शोभा से जुड़ न सका । शोभा के बाद अपनी वासना की पूर्ति वह बॉनी द्वारा करना चाहता है । परंतु बॉनी अस्तित्व के स्तर पर उससे टकराती है । उसे असहाय बनाती है । उसी समय वह अपने सभी बंधनों से मुक्त होकर काशनी की सहायता से अपना खालीपन भरने का असफल प्रयत्न करता है । परंतु काशनी उसे आगे बढ़ने नहीं देती । इस प्रकार प्यासा मनोज अपनी प्यास बुझाने का प्रयास तो करता है, परंतु प्यासा ही रहता है ।

राकेश जी का चौथा उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में चित्रित काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि खालका का खालीपन तथा अकेलापन और दूसरी ओर एलिस की अतृप्त इच्छा तथा आधुनिकता के जोश में रूपये कमाने की इच्छा के कारण ही स्थापित हुआ दिखाई देता हैं ।

इससे ज्ञात होता है कि राकेशजी के उपन्यासों में चित्रित काम संबंध अपनी अतृप्त काम वासना तृप्त करने की आकांक्षा के कारण ही स्थापित हो चुके हैं ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विवेच्य उपन्यासों में अतृप्त काम वासना तथा अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही पुरूष या स्त्री किसी न किसी के साथ काम संबंध स्थापित करते हैं । दांपत्य जीवन में स्थित तनाव, अनबन, अप्रेम, समर्पण का अभाव और स्वच्छंदता की प्रवृत्ति आदि के कारण विवेच्य उपन्यासों में जो काम संबंध चित्रित मिलता है उसमें ज्यादातर अवैध काम संबंध ही दृष्टिगोचर होता है । विवेच्य उपन्यासों के अधिकतर पात्रों का वैवाहिक जीवन नीरस, दु:खमय और अतृप्त दिखाई देता है । उसका मूल कारण हम लेखक के व्यक्तिगत जीवन में पा सकते हैं । स्वयं राकेश ने अपने जीवन में तीन विवाह किये थे । उन अनुभवों ने उन्हें लेखन के लिए 'प्लॉट' ही नही तो अच्छी खासी जमीन भी देदी । उनके द्वारा चित्रित पति-पत्नी का काम-संबंध सुखद कम और दु:खपूर्ण ही ज्यादा मिलता है । अधिकतर स्त्री-पुरूषों का काम संबंध अतृप्त, अवैध, अनैतिक और असामाजिक ही परिलक्षित होता है । जिसे राकेश ने अत्यंत बारीकी से चित्रित किया है ।

विवेच्य उपन्यासों में बनते बिगड़ते स्त्री-पुरूष संबंधों की विविध समस्याएँ -

राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष के काम संबंधों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश जी ने स्त्री-पुरूष के बनते बिगड़ते संबंधों की विविध समस्याओं का भी संकेत दिया है । विवेच्य उपन्यासों में जो समस्याएँ चित्रित हैं वे वैचारिक भिन्नता, प्रेम का अभाव, अहं, स्वच्छंदता, आधुनिकता का प्रभाव तथा व्यक्ति की अपनी-अपनी मजबूरी के कारण उत्पन्न हुयी हैं ।

'अंधेरे बंद कमरे' की नीलिमा और 'अन्तराल' की सीमा तथा 'काँपता हुआ दरिया' की एलिस आधुनिक जीवन जीनेवाली तथा अहं प्रवृत्ति वाली नारियाँ होने के कारण आधुनिकता के जोश में जीवन बिताती हैं । इसी आधुनिकता एवं अहं के कारण उनके परिवार एवं दांपत्य जीवन का सुख गायब हुआ दिखाई देता है । बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरूष संबंधों के कारण पारिवारिक तनाव भी बढ़ जाता है । जैसा की श्यामा और राजीव के परिवार मे बढ़ा था ।

एलिस, सीमा जैसी सुशिक्षित तथा आधुनिक नारी के द्वारा नैतिकता का लोप होता जा रहा है । सीमा धार्मिक बंधनोंसे मुक्त होकर मुस्लिम युवक अख्तर से शादी की चर्चा करती है तब उसके परिवार का वातावरण बिगड़ जाता है । घर में झगड़ा आरंभ होता है । इसी कारण पारिवारिक तनाव बढ़ जाता हे । दूसरी ओर मिसेस दारूवाला के समान कोई अन्य स्त्री या कुमार जैसा पुरूष दांपत्य जीवन में आ जाता है तब सुखमय दांपत्य जीवन की अपेक्षा दु:खमय दांपत्य जीवन ही दिखाई देता है ।

गोपाल जी जेसे आदमी श्यामा जैसी छात्रा पर मोहित हो चुके हैं । यह उनके अतिरिक्त 'सेक्स' के आकर्षण का प्रतीक हैं। एलिस का खालका पर मोहित होना भी एलिस के अतिरिक्त सेक्स के आकर्षण का प्रतीक है । यहाँ गोपाल जी द्वारा आज की शिक्षण पद्धति पर भी तीखा व्यंग किया हुआ परिलक्षित होता है । जब स्त्री-पुरूष में अवैध संबंध स्थापित हो जाता है तब किसी एक को अपने जीवन में तलाक का सामना करना पड़ता हे । कभी सीमा और बीजी जैसों के बीच जो संघर्ष चलता है वह नये और पुराने मूल्यों तथा विचारों की टकराहट को परिभाषित करता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्त्री पुरूष के जो नये संबंध स्थापित हो रहे हैं और बिगड़ रहे हैं उनके पीछे कारण अनेक हैं । इसी बनते-बिगड़ते संबंधों के कारण परिवार में तनाव का वातावरण, यौन ग्रस्त रोग का फैलाव परिलक्षित होता है । इसी कारण समाज में बीमारी की समस्याएँ निर्माण होकर सामाजिक स्वास्थ्य को खतरा पहुँचा हुआ परिलक्षित होता है । विवेच्य उपन्यासों में इसका पर्याप्त चित्रण हुआ है ।

उपलब्धियाँ -

1. मोहन राकेश के उपन्यासों में दु:खमय दांपत्य जीवन का चित्रण ज्यादातर दिखाई देता हैं । ये उनके उपन्यासों की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं ।
2. मोहन राकेश के उपन्यासों में स्त्री-पुरूश संबंधों का जो चित्रण हुआ हैं वह आज सर्वत्र दृष्टिगोचर होता हैं ।
3. मोहन राकेश के उपन्यासों में चित्रित जो समस्याएँ हैं वह वर्तमान कालीन ही हैं ।
4. मोहन राकेश के उपन्यासों का मुख्य विषय स्त्री-पुरूष संबंध ही रहा हैं ।
5. मोहन राकेश के उपन्यासों में बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरूष संबंधों को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया हैं ।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

1. मोहन राकेश के उपन्यासोंमें चित्रित नारी
2. मोहन राकेश के कथासाहित्य में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध
3. राकेश के नाटकोंमें चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध.

यहाँ मैंने अपनी सीमा में अध्ययन किया हैं । राकेश के साहित्य पर ऊपर निर्देशित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य संपन्न हो सकता हैं ।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ सूची

अ. नं.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवं प्रयुक्त संस्करण
1	राकेश मोहन	अंधेरे बंद कमरे	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1961
2	राकेश मोहन	न आने वाला कल	राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण 1994
3	राकेश मोहन	अंतराल	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, संस्करण 1974
4	सं. जयदेव तनेजा	एकत्र	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998

संदर्भ ग्रंथ-सूची

अ. नं.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	प्रकाशन एवं प्रयुक्त संस्करण
1	अंसल, (डॉ.) कुसुम पुरी	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर	अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1993
2	कुमार कृष्ण	हिंदी कथा साहित्य परख और पहचान	विभूति प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण - दिसम्बर 1987
3	कौर सुनंत	समकालीन हिंदी कहानी : स्त्री-पुरूष संबंध	अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1991
4	चातक, (डॉ.) गोविंद	आधुनिक नाटक का मसीहा	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1975
5	जैन नेमिचंद्र	अधूरे साक्षात्कार	अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. दरियागंज दिल्ली - 6 प्रथम संस्करण 1966
6	जोशी जीवन प्रकाश	नाटककार मोहन राकेश (एक सर्वेक्षण : समीक्षा)	सन्मार्ग प्रकाशन, बैंम्लो रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1975
7	तनेजा (डॉ.) जयदेव	एकत्र	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1998
8	त्यागी (डॉ.) सुमित्रा	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन	साहित्य प्रकाशन भालीवाडा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978
9	पट्टणशेट्टी (डॉ.) सिद्धलिंग	मोहन राकेश और उनके नाटक एक अधुनातन विश्लेषण	अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण - 1995
10	पंडिता विमला कुमारी	उपन्यासकार मोहन राकेश (अंतराल के विशेष संदर्भ में)	पंचशील प्रकाशन जयपुर प्रथम संस्करण - 1978

11	पिंपलापुरे (डॉ.) मीना	मोहन राकेश का नारी संसार	प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1987
12	प्रताप (डॉ.) राजेंद्र	हिंदी उपन्यास : तीन दशक	अभिनव प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1983
13	प्रभाकर (डॉ.) ओम	कथाकृती मोहन राकेश	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज दिल्ली प्रथम संस्करण - 1992
14	पानेरी (डॉ.) हेमेंद्रकुमार	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास - मूल्य संक्रमण	संधी प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर प्रथम संस्करण - 1974
15	बांदिवडेकर चंद्रकांत	आधुनिक हिंदी उपन्यास सृजन और आलोचना	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1985
16	मदान (डॉ.) इंद्रनाथ	हिंदी उपन्यास पहचान और परख	लिपि प्रकाशन दरियागंज ,दिल्ली द्वितीय संस्करण - 1993
17	मदान (डॉ.) इंद्रनाथ	आज का हिंदी उपन्यास	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली - 6 प्रथम संस्करण 1966
18	मिश्र (डॉ.) उर्मिला	आधुनिकता और मोहन राकेश	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
19	मिश्र रामदरश	हिंदी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली - 6 प्रथम संस्करण 1968

20	मंत्री उषा	हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, दिल्ली
21	रस्तोगी गिरिश	मोहन राकेश और उनके नाटक	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद दूवितीय संस्करण - 1989
22	राकेश अनीता	चन्द सतरें और	राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1993
23	राकेश मोहन	मोहन राकेश की डायरी	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण - 1994
24	शर्मा (डॉ.) गिरिधर प्रसाद	हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन कृष्णनगर दिल्ली,
25	शर्मा (डॉ.) घनानंद 'जदली'	मोहन राकेश का उपन्यास साहित्य	शांति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1990
26	सिनहा (डॉ.) सुरेश	हिंदी उपन्यास	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद दूवितीय संस्करण - मई 1972
27	सिंह गोरधन	मोहन राकेश की कहानी यात्रा	चिन्मय प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण - 1982
28	सिंह विजयमोहन	आधुनिक हिंदी उपन्यासोंमें प्रेम की परिकल्पना	रचना प्रकाशन, इलाहाबाद - 1 संस्करण - 1972
29	स्वर्णलता (डॉ.)	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि	विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर - 3 संस्करण - 1975

पत्र-पत्रिकाएँ

1	नटरंग	खण्ड 14 अंक 56 अक्तूबर-दिसम्बर - 1992	